SEMESTER – VI

D·S·E – 4[A]

• DETERMINANTS OF INDIA FOREIGN POLICY

भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्व

राजनीतिक दृष्टि से दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप में भारत की स्थिति काफी महत्वपूर्ण तो है ही, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी भारत की स्थिति कम महत्वपूर्ण नहीं है, चूँकि भारत की वैदेशिक नीति से दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीपीय नीति में उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत संख्या बल पर नहीं, बल्कि व्यापक राजनीतिक परिवर्तन सम्बन्धी अभिकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण है, जिससे कोई भी राष्ट्र मुँह नहीं मोड़ सकता. अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारतीय वैदेशिक नीति का महत्वपूर्ण स्थान है.

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में विदेश नीति की मूल बातों का समावेश किया गया है. इस अनुच्छेद का कहना है कि भारत अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बढ़ावा देगा, राष्ट्र-राज्यों के बीच न्याय और सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखने का प्रयास करेगा. अन्तर्राष्ट्रीय कानून के प्रावधानों तथा संधियों का आदर करेगा, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उभरे हुए विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से समाधान का प्रयास करेगा और इसके लिए किये जाने वाले शांतिपूर्ण प्रयासों में भरपूर सहयोग देगा.

Scanned with CamScanner

भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्व (Determining Factors of India's Foreign Policy)

भारत के वैदेशिक नीति के निर्धारण में कई तत्वों का प्रभाव रहा है, जिनमें मुख्यतः प्रमुख हैं–

1. **भौगोलिक तत्व**–किसी भी देश के वैदेशिक नीति के निर्धारण में उस देश की भौगोलिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण हाथ होता है. नेपोलियन बोनापार्ट ने भी कहा था कि "भौगोलिक नीति उसके भूगोल द्वारा निर्धारित होती है", जो सही ही है. भारतीय वैदेशिक नीति के निर्माण के सन्दर्भ में भी भौगोलिक तत्व का महत्व है. भारतीय वैदेशिक नीति के निर्माण में भारत का आकार एशियाई देशों में उसकी विशेष स्थिति, एशियाई उपमहाद्वीप में उसकी भूमिका तथा भारतीय भू-भाग से जुड़ी सामुद्रिक तथा पर्वतीय सीमाएँ जैसे भौगोलिक तत्व की महत्ता है. भारत के उत्तर में साम्यवादी चीन, इस्लामिक देश पाकिस्तान और अफगानिस्तान (पश्चिमोत्तर) है. इन देशों के राजनीतिक सामाजिक स्थिति और वैदेशिक नीति को देखकर भी भारत अपना वैदेशिक सम्बन्ध निर्धारित करता आ रहा है. हिमालय की गोद में बसे हुए नेपाल जो भारत के उत्तर दिशा में है, से भी भारत को बेहतर सम्बन्ध बनाए रखना राष्ट्रीय हित के निर्धारण में उचित ही है. स्पष्ट है कि भारत की वैदेशिक नीति के निर्धारण में भौगोलिक तत्व अन्य तत्त्वों की भाँति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

Scanned with CamScanner

2. **गुटबंदियाँ**–स्वतन्त्र भारत के वैदेशिक नीति के निर्धारण में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में व्याप्त गुटबंदियों ने प्रभावित किया है. जब भारत स्वतन्त्र हुआ, तो उसके सामने यह प्रश्न आया कि वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में दृष्टिगोचर दो महाशक्ति जो एक गुट का रूप ले चुका था, किसके साथ रहे. अमरीका के नेतृत्व वाले पूँजीवादी गुट के साथ या दूसरी तरफ पूर्व सोवियत संघ के नेतृत्व वाले साम्यवादी देशों के साथ. भारत के लिए किसी भी एक गुट में शामिल होना अहितकर था. भारत अमरीका के नेतृत्व वाले पूँजीवादी गुट में शामिल नहीं हो सकता था, क्योंकि भारतीय जनमानस ऐसा स्वीकार नहीं कर सकता था. दूसरी तरफ भारत प्रत्यक्ष रूप से सोवियत संघ की तरफ भी नहीं जा सकता था, क्योंकि भारत को आर्थिक दृष्टि-कोण से अमरीका की जरूरत थी. ऐसी विषम परिस्थिति में भारत ने दोनों के बीच का रास्ता निकालते हुए एक अलग वैदेशिक नीति कायम की जिसका नाम दिया गया गुटनिरपेक्षता. यह गुट से अलग होने की तथा स्वतन्त्र रूप से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की भूमिका निभाने की नीति है. यह स्पष्ट हो कि गुटनिरपेक्षता अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से अलग-थलग न होकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने से सम्बन्धित है. यही कारण है कि गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों द्वारा अमरीका और सोवियत संघ के गुटीय नीति के कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कायम तनाव पूर्णस्थिति यानि शीत युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है.

Scanned with CamScanner

3. विचारधाराओं का प्रभाव—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विचारधारा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है और वैदेशिक नीति के निर्धारण में तो उसकी सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है. भारत के वैदेशिक नीति के निर्धारण में भी विचारधाराओं का प्रभाव रहा है. ऐसे तो दुनिया में मात्र दो ही विचारधारा हैं—एक मार्क्सवाद और दूसरा उदारवाद (पूँजीवाद). भारत का झुकाव प्रत्यक्ष रूप से न मार्क्सवाद की ओर रहा है न पूँजीवाद की ओर रहा है. यहाँ मिश्रित अर्थव्यवस्था के साथ मिश्रित विचारधारा को स्वीकार किया गया है और इसका प्रभाव भारत की वैदेशिक नीति के निर्धारण में रहा है. ऐसे भारतीय वैदेशिक नीति के निर्धारण में गांधीवादी दर्शन का प्रभाव सिद्धान्त और नेहरू के लोकतान्त्रिक समाजवाद का प्रभाव व्यवहारतः देखने को मिलता है. यहाँ स्पष्ट है कि लोकतान्त्रिक समाजवाद समसामयिक उदारवाद का ही एक रूप है. अन्त में भारतीय वैदेशिक नीति के निर्धारण में अरविन्दो घोष, रबीन्द्रनाथ टैगोर तथा एम. एन. राय के मानवतावादी विचारों की भी झलक मिलती है.

Scanned with CamScanner

4. आर्थिक तत्व–वैदेशिक नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण तत्व है–आर्थिक तत्व. कहना न होगा कि भारत ने स्वयं को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में व्याप्त गुट से अलग इसीलिए रखा कि उसे दोनों ही गुटों से आर्थिक लाभ मिल सके. भारत की वैदेशिक नीति इस रूप में निर्धारित की जाती है कि वह दुनिया के तमाम देशों से आवश्यक वस्तुओं का आयात कर सके और आवश्यकता से ज्यादा उत्पादित वस्तुओं का निर्यात भी कर सके. वास्तविकता भी यही है कि शीत युद्ध के समय में भारत को दोनों गुटों से आर्थिक मदद मिलती रही है.

Scanned with CamScanner

5. सैनिक तत्व–भारतीय वैदेशिक नीति के निर्धारण में सैनिक तत्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका है. भारत जब स्वतन्त्र हुआ, तो उसकी सैनिक स्थिति काफी दुर्बल थी. अपनी सैनिक दुर्बलता के कारण ही भारत वर्षों शिकंजे में रखने वाले ब्रिटेन के राष्ट्रमंडल जैसे संगठन का सदस्य बना, ताकि उसे समय अनुसार सैनिक सहायता मिलती रहे. भारतीय वैदेशिक नीति के सन्दर्भ में यहाँ तक कहा जाता है कि वह अपनी सैनिक दुर्बलता के कारण ही ज्यादा विश्व मैत्री पर जोर देता है. वास्तविकता भी यही है कि सैनिक शक्ति और आण्विक हथियार वैदेशिक नीति के महत्वपूर्ण तत्व है. जब से भारत के पास सैनिक मजबूती और आण्विक शक्ति प्राप्त हुई है, तब से भारत के वैदेशिक नीति में पहले से काफी बदलाव आ गया है.

Scanned with CamScanner

6. राष्ट्रीय हित–किसी भी देश के वैदेशिक नीति के निर्धारण में राष्ट्रीय हित का महत्वपूर्ण हाथ होता है और यहाँ भारत भी इसका अपवाद नहीं है. भारत गुटों से अलग रहता है, गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन करता है, राष्ट्रमण्डल का सदस्य बनता है, अपने पड़ोसी देशों या अन्य देशों से वैदेशिक सम्बन्ध स्थापित करता है. भारत के इन तमाम कार्य या भूमिका के पीछे राष्ट्रीय हित की ही महत्वपूर्ण भूमिका है.

Scanned with CamScanner

7. ऐतिहासिक परम्परा–भारत के वैदेशिक नीति के निर्माण में ऐतिहासिक परम्पराओं की भी भूमिका रही है. अतीत से ही भारत की नीति शान्तिप्रिय व साम्राज्य विरोधी रही है. अशोक ने अपने शासन काल में अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को धर्म प्रचार एवं विश्व शांति के प्रचार हेतु श्रीलंका भेजा. जिसका प्रमाण है कि आज तक भारत का श्रीलंका से बेहतर वैदेशिक सम्बन्ध है. भारतीय वैदेशिक नीति में विश्व शांति एवं विश्व बन्धुत्व पर जोर दिया गया है जिसके पीछे भी ऐतिहासिक परम्परा ही है.

इस अपेक्षाकृत संक्षिप्त प्रस्तुति में मैंने भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्वों को सामने लाने की कोशिश की है। मुझे यकीन है कि यह आपके मन में कई सवाल उठाएगी, जिनका जवाब देने में मुझे खुशी व संतुष्टि होगी।

डा० उपेन्द्र कुमार गुप्ता
राजनीति विज्ञान विभाग
चास महाविद्यालय, चास
मो० - 9507545635

Scanned with CamScanner